



यूरोप में अफ़ग़ान शरणार्थियों पर गहराता संकट

डॉ स्मिता तिवारी*

यूरोप में लगातार बढ़ रहे शरणार्थियों की समस्या के मद्देनज़र, एक वृहत नीति परिवर्तन के अंतर्गत जर्मनी, अफ़ग़ानिस्तान से आने वाले शरणार्थियों पर रोक लगाने की कोशिश में जुटा है। जात रहे कि जर्मनी, यूरोपीय देशों में शरणार्थियों को अपनाने वाला सबसे बड़ा देश है। पिछले कुछ वर्षों से पश्चिम एशिया में 'सीरिया संकट' के कारण, यूरोप में सीरियाई शरणार्थियों की संख्या में भारी वृद्धि हुई है और 2014 के अंत तक, सीरिया विश्व का सबसे अधिक शरणार्थी पैदा करने वाला देश बन गया है।¹ गौरतलब है कि पिछले तीन दशकों तक अफ़ग़ानिस्तान सबसे अधिक शरणार्थी पैदा करने वाला देश रहा था।² वर्तमान समय में, यूरोप, विशेषकर जर्मनी, जाने वाले शरणार्थियों में अफ़ग़ान शरणार्थी, सीरियाई शरणार्थियों के बाद, दूसरा सबसे बड़ा समूह है। शरणार्थियों के लिए संयुक्त राष्ट्र के उच्चायुक्त के अनुसार वर्ष 2015 के प्रथम अर्धवार्षिक में लगभग 80,000 अफ़ग़ान शरणार्थियों ने यूरोप में शरण लेने हेतु आवेदन किया था जबकि वर्ष 2014 के प्रथम अर्धवार्षिक में आवेदनों की संख्या लगभग 24,000 थी।³ इस सन्दर्भ में यह समझना आवश्यक है कि वर्तमान समय में जब अफ़ग़ानिस्तान राष्ट्र-निर्माण की प्रक्रिया से गुजर रहा है तब अफ़ग़ानवासी देश छोड़ कर क्यों जा रहे हैं? यूरोपीय देशों की इन अप्रवासी शरणार्थियों को लेकर क्या प्रतिक्रिया है? शरणार्थियों के लिए संयुक्त राष्ट्र के उच्चायुक्त और अफ़ग़ानिस्तान सरकार का इस मुद्दे पर क्या रुख है? अफ़ग़ान सरकार ने प्रवास रोकने तथा देश प्रत्यावर्तन एवं पुनर्वास के क्या प्रयास किए हैं? भविष्य में अफ़ग़ान शरणार्थियों के लिए क्या संभावनाएँ हैं?

अफ़ग़ान शरणार्थी की समस्या दशकों पुरानी है। 1978 के गृहयुद्ध और 1979 में सोवियत संघ के आक्रमण के पश्चात अफ़ग़ानवासियों का विस्थापन और दूसरे देशों में शरण लेने प्रक्रिया शुरू हुई जो बाद के दशकों में भी तालिबान के सत्ता में आने और क्रूरता के साथ शरिया क़ानून को लागू करने की वजह से

जारी रही। वर्ष 2001 में भी 'आतंकवाद के खिलाफ युद्ध' शुरू किए जाने की वजह से भी विस्थापन और प्रवासन की प्रक्रिया चलती रही। वर्तमान समय में भी अफ़ग़ानियों का देश छोड़कर यूरोप में शरण लेने के लिए जाने के अनेक कारण हैं। अंतराष्ट्रीय सहायता सुरक्षा बल की वापसी (कुछ संख्या को छोड़कर) के बाद अफ़ग़ानिस्तान में सुरक्षा स्थिति कमज़ोर हुई है। एक तरफ अंतराष्ट्रीय समुदाय का ध्यान, पश्चिम एशिया, विशेषकर सीरिया पर केंद्रित होने के कारण तालिबान पुनः सक्रिय हो गया है। यहाँ तक की कुछ माह पूर्व तालिबान ने अफ़ग़ानिस्तान के कुंदूज़ प्रांत, जो पहले तालिबान का गढ़ रहा था, पर अपना आधिपत्य जमा लिया और वहाँ की जेल से अनेक तालिबान कार्यकर्ताओं और समर्थकों को छुड़ाने में सफल रहा। इस समय अफ़ग़ान सेना और तालिबान के बीच की लड़ाई में अनेक अफ़ग़ानी विस्थापित हुए। अफ़ग़ानिस्तान में संयुक्त राष्ट्र सहायता मिशन के अनुसार, वर्ष 2015 के प्रथम अर्धवार्षिक में, सुरक्षा बलों और विद्रोहियों के मुठभेड़ में लगभग 5000 नागरिक मारे गये या आहत हुए। वहीं दूसरी ओर, पूर्वी अफ़ग़ानिस्तान में इस्लामिक स्टेट की उपस्थिति ने सुरक्षा के मुद्दे को और जटिल बना दिया है। पुनः जातीय समूह जैसे शिया या हज़ारा, तालिबान और अल कायदा द्वारा नरसंहार का शिकार हो रहे हैं तथा भयभीत हैं। इन कारणों के अतिरिक्त एक महत्वपूर्ण कारण यह भी है कि पाकिस्तान और अफ़ग़ानिस्तान के बीच बढ़ते अविश्वास और बिगड़ते संबंधों तथा पाकिस्तान में अफ़ग़ान शरणार्थियों के साथ हुए दुर्यवहार की वजह से अफ़ग़ान शरणार्थी पाकिस्तान न जाकर यूरोप को प्राथमिकता दे रहे हैं। अफ़ग़ानिस्तान के अलावा पाकिस्तान से भी अफ़ग़ान शरणार्थी यूरोप की ओर रुख कर रहे हैं। शरणार्थियों के लिए संयुक्त राष्ट्र के उच्चायुक्त के अनुसार पाकिस्तान में अभी भी 1.5 मिलियन पंजीकृत और 1 मिलियन अपंजीकृत अफ़ग़ान शरणार्थी मौजूद हैं⁴ जो पाकिस्तान में हो रही दुर्दशा और दबाव के कारण पाकिस्तान छोड़ने के लिए मजबूर हो रहे हैं। उच्चायुक्त के अनुसार, ईरान में पंजीकृत अफ़ग़ान शरणार्थियों की संख्या 1 मिलियन हैं।⁵

यूरोपीय देशों में सरकारें 'शरणार्थी संकट' की समस्या से जूझने के लिए प्रयासरत हैं। शरणार्थी अपने जीवन को खतरे में डाल कर भी, कभी वैधानिक तो कभी अवैधानिक तरीके से यूरोप पहुँचने को तैयार हैं। जर्मन अधिकारियों का कहना है कि अफ़ग़ानिस्तान सार्वभौमिक रूप से असुरक्षित नहीं है और इसके ज़्यादातर भाग पर अफ़ग़ान सरकार का नियंत्रण है, अतः सभी प्रवासियों को शरण नहीं दी जा सकती। अधिकारियों का ये भी कहना है कि जर्मन सेना ने 14 वर्ष अफ़ग़ानिस्तान की सुरक्षा की और साथ ही जर्मनी ने 2.15 बिलियन डॉलर भी अफ़ग़ानिस्तान में नागरिक परियोजनाओं पर खर्च किया है। अतः इन प्रयासों द्वारा जर्मनी, दूसरे की सहायता करने की अपनी प्रतिबद्धता को पूरा करता है और इससे अफ़ग़ान शरणार्थियों को शरण देने की ज़िम्मेदारी कम हो जाती है। फलस्वरूप, जर्मन सरकार अपंजीकृत अफ़ग़ान शरणार्थियों को वापस भेज देना चाहती है। जर्मनी ने अभी तक लगभग 50 प्रतिशत प्रवासी आवेदनों को अस्वीकृत कर दिया है।⁶ अफ़ग़ानवासियों का अवैधानिक रूप से जर्मनी में प्रवेश रोकने के लिए, जर्मन सरकार ने अफ़ग़ानिस्तान में एक अभियान शुरू किया है, जिसके अंतर्गत काबुल एवं अन्य शहरों में, पश्तून और दारी, दो प्रमुख भाषाओं में होर्डिंग्स लगाए जा रहे हैं। इन होर्डिंग्स में अफ़ग़ानिस्तान न

छोड़ने, अफवाहों पर ध्यान न देने और मानव तस्करों से बच कर रहने की सलाह दी गयी है। हालाँकि जर्मनी ने यह भी साफ कर दिया है कि वास्तव में जिन प्रवासियों को शरण मिलनी चाहिए, उनकी सहायता की जाएगी।

एक जर्मन दैनिक, फ्रैंकफर्टर अल्लजेमीन ज़ाइटिंग (Frankfurter Allgemeine Zeitung) में छपे रिपोर्ट के अनुसार, जर्मन सरकार ने यूरोपीय संसद से आग्रह किया है कि अफ़गानिस्तान की सरकार के साथ एक ऐसा समझौता किया जाए जिसके अंतर्गत उन अफ़गान शरणार्थियों, जिनके आवेदन अस्वीकृत कर दिए गये हैं, को वापस भेजने का प्रावधान हो।⁷ इस रिपोर्ट के अनुसार जर्मनी अफ़गानिस्तान को सीरिया के समकक्ष नहीं रखता है जहाँ अभी भी गृहयुद्ध चल रहा है। इसके अनुसार अफ़गानिस्तान की स्थिति सीरिया से बेहतर और तुलनात्मक रूप से स्थिर है। यूरोपीय संसद के अध्यक्ष, मार्टिन शुल्ज ने शरणार्थियों के लिए संयुक्त राष्ट्र के उच्चायुक्त आंटोनीयो गुटररेस की बात दोहराते हुए कहा कि जो शरण पाने के हकदार नहीं हैं उन्हें लौट जाना चाहिए।⁸ यूरोपीय देशों के कई राजनीतिक दलों ने शरणार्थियों को रोकने के लिए सख्त सीमा सुरक्षा की माँग की है। फ्रांस ने भी यूरोपीय संघ की बाहरी सीमा पर सुरक्षा बढ़ाने की माँग की है। शरणार्थियों को नियंत्रित करने के लिए यूरोपीय संघ के सदस्य देशों ने बाहरी सीमा पर 235 किलो मीटर का घेराव तैयार किया है जिसे बनाने में 175 मिलियन पौंड लगे हैं।⁹ ऑस्ट्रीया और स्लोवीनिया जैसे देश, जो शरणार्थियों के लिए यूरोप में प्रवेश का मुख्य द्वार हैं, ने भी सीमाओं को बंद करने के लिए एक दीवार खड़ी करने की योजना बनाई है।¹⁰ हालाँकि यूरोप द्वारा उठाए गये इस कदम की मानव अधिकार संगठनों ने आलोचना की है क्योंकि इससे शरणार्थियों के बालकन देशों में ही फँस कर रह जाने की संभावना है।

वहीं दूसरी ओर, अफ़गान सरकार बड़ी संख्या में अफ़गान शरणार्थियों के निर्वासन से चिंतित हैं। अफ़गानिस्तान की बिगड़ती सुरक्षा व्यवस्था, कमजोर आर्थिक स्थिति और तालिबान के पुनरुद्धार के मद्देनज़र, अफ़गान शरणार्थियों की वापसी और उनका पुनर्वास एक नई चुनौती के समान है। अपनी शुरुआती प्रतिक्रिया में अफ़गान मिनिस्ट्री ऑफ़ रेफ्यूजी एंड रिपेट्रियेशन ने अफ़गान शरणार्थियों के निर्वासन पर अप्रसन्नता और गहरी चिंता जताई थी। उनके अनुसार, वर्तमान समय में अफ़गानिस्तान, शरणार्थियों को वापस लेने की स्थिति में नहीं है। परंतु अफ़गानिस्तान के राष्ट्रपति मुहम्मद अशरफ़ घनी और जर्मन चंसलर एंजेला मर्केल के बीच हुई बातचीत के दौरों के बाद यह तय हो गया कि अफ़गानिस्तान अपने प्रवासी नागरिकों को, जिनका आवेदन स्वीकृत नहीं हुआ है, अफ़गानिस्तान में पुनर्वास में सहायता करेगा।¹¹ अफ़गानिस्तान के उप राष्ट्रपति के प्रवक्ता, ज़फ़र हाशमी के अनुसार, जेनेवा कन्वेंशन के हस्ताक्षरकर्ता के रूप में ये अफ़गानिस्तान का उत्तरदायित्व है कि वो अपने नागरिकों के पुनर्वास में सहायता करे।¹² इस पहल के अंतर्गत, अफ़गान मिनिस्ट्री ऑफ़ रेफ्यूजी एंड रिपेट्रियेशन और प्रवासन के लिए अंतर्राष्ट्रीय संगठन ने 13 दिसंबर 2015 को अंतर्राष्ट्रीय प्रवासन दिवस मनाया जिसमें वहाँ के नागरिकों को प्रवासन की चुनौतियों और संभावनाओं के बारे में बताया गया। पूर्व राष्ट्रपति हामिद करज़ई

ने देश के युवाओं को देश में रहकर उसके विकास में योगदान देने का आवाहन किया। इसी क्रम में, अफ़ग़ानिस्तान सरकार ने शरणार्थियों से संबंधित मुद्दों को हल करने के लिए 'प्रवास के लिए उच्च आयोग' की स्थापना की है।¹³

हालाँकि अफ़ग़ान शरणार्थियों के लिए दोनों परिस्थितियाँ दुखद हैं। जहाँ यूरोप में उन्हें अनेक प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है वहीं दूसरी ओर अफ़ग़ानिस्तान वापस आकर भी उनके अस्तित्व का संकट बना रहेगा। वर्तमान समय में अफ़ग़ानिस्तान सरकार इस 'शरणार्थी दबाव' का पूरी तरह सामना करने में सक्षम प्रतीत नहीं होती है। उधर तालिबान निर्वासित शरणार्थियों की परिस्थिति का लाभ उठाकर युवाओं को प्रलोभित कर सकता है क्योंकि ऐसे निर्वासित शरणार्थी तालिबान का साथ देकर, यूरोपीयन यूनियन और नाटो का विरोध कर सकते हैं। 'शरणार्थी संकट' का दूसरा पहलू इस्लामिक स्टेट और तालिबान के बीच प्रतिस्पर्धा के रूप में भी देखा जा सकता है। हाल ही में इस्लामिक स्टेट ने सीरियाई शरणार्थियों के यूरोप प्रवास का लाभ उठा कर पेरिस पर हमला किया तथा वैश्विक आतंकवादी संगठन के रूप में अपनी छवि मजबूत की है। अफ़ग़ानिस्तान में भी इस्लामिक स्टेट की उपस्थिति से इनकार नहीं किया जा सकता है हालाँकि तालिबान अभी भी वहाँ एक प्रभावशाली संगठन है। पर इस्लामिक स्टेट की बढ़ती लोकप्रियता तालिबान में असुरक्षा पैदा कर सकती है। अब तक तालिबान अफ़ग़ानिस्तान और पाकिस्तान तक ही सीमित रहा है पर इस्लामिक स्टेट की छवि का काट बनने के लिए तालिबान को भी अपनी जड़ें फैलानी होंगी। और इसके लिए वो निर्वासित शरणार्थियों को किस प्रकार इस्तेमाल करेगा ये समय के साथ ही स्पष्ट हो पाएगा। पर ऐसा प्रतीत होता है कि अफ़ग़ान शरणार्थियों पर संकट मंडराता रहेगा और उनका संघर्ष आने वाले दिनों में भी जारी रहेगा।

** डॉ स्मिता तिवारी विश्व मामलों की भारतीय परिषद में अनुसंधान अध्ययता हैं। ये उनके व्यक्तिगत विचार हैं।*

¹ UNHCR, <http://www.unhcr.org.uk/about-us/key-facts-and-figures.html> (Accessed on 12 December 2015).

² Ibid.

³ Michelle Jasmin Dimasi and William Maley, "The Refugee Crisis and Afghan Asylum-Seekers in Europe: Testimony of Youth," *Foreign Policy Journal*, 20 November 2015. URL: <http://www.foreignpolicyjournal.com/2015/11/20/the-refugee-crisis-and-afghan-asylum-seekers-in-europe-testimony-of-youth/> (Accessed on 12 December 2015).

⁴ <http://www.unhcr.org/pages/49e487016.html> (Accessed on 22 December 2015).

⁵ Ibid.

⁶ <http://www.telegraph.co.uk/news/worldnews/europe/germany/11956007/Germany-to-start-sending-back-migrants-from-Afghanistan-according-to-reports.html> (Accessed on 12 December 2015).

⁷ <http://www.dw.com/en/afghan-refugee-minister-afghans-should-be-treated-on-par-with-syrians/a-18806357> (Accessed on 23 December 2015).

⁸ <http://www.euractiv.com/sections/justice-home-affairs/berlin-seeks-deport-more-failed-afghan-refugees-318877> (Accessed on 23 December 2015).

⁹ Eurasia Review, <http://www.eurasiareview.com/21112015-refugees-fear-being-trapped-in-balkans-analysis/> (Accessed on 12 December 2015).

¹⁰ Ministry of Refugees and Repatriations, Islamic Republic of Afghanistan, 31 October 2015. URL: <http://morr.gov.af/en/news/56057>.

¹¹ Ministry of Refugees and Repatriations, Islamic Republic of Afghanistan.

¹² "Afghanistan to accept its citizens deported from Germany", *Daily Sabah, Mideast*, 02 November 2015.

¹³ Ministry of Refugees and Repatriations, Islamic Republic of Afghanistan, 14 December 2015.